

वर्ष : जनवरी 2023, अंक : 01

मूल्य : 25 रुपये

ISSN : 2583-2204 (online)

प्रगतिशील खेती

नवीनतम् कृषि तकनीकी पर आधारित अर्धवार्षिक पत्रिका



कृषिरत महिलाओं
के जोखिम एवं श्रम
कम करने के उपाय

सरसों उत्पादन
में वृद्धि एवं
आर्थिक लाभ

**भारतीय कृषि में
ड्रोन का उपयोग**

प्रगतिशील खेती

वर्ष : जनवरी 2023, अंक : 01

मुख्य संरक्षक

डा. गया प्रसाद

पूर्व कुलपति, सरदार वल्लभ भाई पटेल
कृषि एवं अभियान्त्रिकी विश्वविद्यालय, मेरठ
मार्ग दर्शक मण्डल

डा. आरती श्रीवास्तव

पूर्व कुलपति, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय
कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर

डा. अरविन्द कुमार

पूर्व कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई
केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी

डा. केके सिंह

पूर्व सहायक महानिदेशक (इन्जी.) भाकृअनुप
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

प्रधान संपादक

डा. वेद प्रकाश चौधरी

प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप - भारतीय
कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ

सह: संपादक

डा. डी एम डेनिश

विभागाध्यक्ष, सैम हिगिनबॉटम कृषि
अभियान्त्रिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विनय कुमार सिंह (इंजीनियर)

अधिसासी अभियन्ता, लघु सिंचाई
विभाग ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

डा. राम चन्द्र

सहायक प्राध्यापक, भारतीय
प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली

डा. निशा वर्मा

वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भारतीय कृषि
प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ

संपादक मण्डल

डा. संजय कुमार पटेल

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय
कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर

डा. एमके सिंह

भाकृअनुप-भारतीय गन्ना
अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

डा. हरीलाल कुशवाहा

भाकृअनुप-भारतीय कृषि
अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

डा. कुशाग्र जोशी

भाकृअनुप-विवेकानन्द पर्वतीय
कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोडा

डा. सौरभ वर्मा

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, अयोध्या

डा. नवीन चन्द्र साही

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर

डा. राकेश कुमार

केन्द्रीय औषधीय एवं संगंध पौधा संस्थान, पन्तनगर

डा. निर्मल

भाकृअनुप - भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान
संस्थान, मेरठ

विषय सूची

04 भारतीय कृषि में ड्रोन का उपयोग

• संतोष कुमार • निशा वर्मा



10 कृषिरत महिलाओं के श्रम व जोखिम कम करने के उपाय

• कुशाग्र जोशी • श्यामनाथ
• बी.एम. पाण्डेय • लक्ष्मी कान्त

14 पर्वतीय महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण में सुधार

• रेनु जेटी • प्रतिभा जोशी • पंकज नौटियाल

20 जैविक खेती: रीति एवं नीति

• प्रकाश चन्द घासल • राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
• जयराम चौधरी • रहस बिहारी तिवारी
• निर्मल • अंकुर कुमार

28 भारत में वर्ष भर हरे चारे का उत्पादन एवं संरक्षण

• अहमद फहीम • राकेश कुमार सिंह
• अमित कुमार, • एम के सिंह • डी के सिंह
• पंकज कुमार मौर्य • अनुज कुमार

34 पशुओं में चयापचयी रोग : कारण, लक्षण एवं निदान

• राकेश कुमार सिंह • पंकज कुमार मौर्य
• गुलाब चन्द्र • अहमद फहीम • प्रेम सागर मौर्य

40 संरक्षण कृषि में कार्बन उत्सर्जन पर संक्षिप्त समीक्षा

• सतीश कुमार सिंह • मनीष कुमार
• के.पी. सिंह • यू. आर. बड़ेगावकर

44 धान की सीधी बुवाई में ड्रम सीडर के उपयोग से लाभ

• आर. के. कनौजिया • एम. एस. पाल • ए. के. सिंह

48 सरसों उत्पादन में वृद्धि एवं आर्थिक लाभ

• देवेन्द्र कुमार निर्मल • लक्ष्मण राम मीणा
• सुरेश मलिक • ललित कृष्ण मीणा

54 बाकला की खेती से खाद्य और पोषण सुरक्षा

• एच.एल. रैगर • एन.के. जाजोरिया



खंडन

लेखों में व्यक्त विचारों, जानकारियों, आकड़ों इत्यादि के लिये लेखक स्वयं जिम्मेदार है, जिसके लिये संपादक प्रगतिशील खेती की सहमति आवश्यक नहीं है। प्रतिका में प्रकाशित लेखों और अन्य सामाग्री का कॉपीराइट आदि का संपादक मण्डल के पास सुरक्षित है। इन्हे पुनः प्रकाशन हेतु संपादक से अनुमति आवश्यक है।

प्रकाशक: श्रीमती सुधा चौधरी

प्रगति इन्टरनेशनल साइंटिफिक रिसर्च फाउण्डेशन, मेरठ

कृषिरत महिलाओं के जोखिम एवं श्रम कम करने के उपाय



कुशाग्र जोशी
वरिष्ठ वैज्ञानिक
श्यामनाथ, वैज्ञानिक
बी एम पाण्डेय
प्रधान वैज्ञानिक
लक्ष्मी कान्त, निदेशक
भाक अनुप-विवेकानंद
पर्वतीय कृषि अनुसंधान
संस्थान, अल्मोड़ा

भारत में बहुसंख्यक ग्रामीण महिलाएं कृषि में भाग लेती हैं। वे 60 से 70 प्रतिशत कृषि कार्यों के लिए उत्तरदायी हैं जैसे अधिकांशतः फसलों की बुवाई, रोपाई, कटाई, प्रसंस्करण, आदि। कृषक महिलाएं प्रतिदिन 10-14 घंटे कार्य करती हैं, जिसमें से आधा समय घरेलू व पशुपालन के कार्यों में, तो आधा समय कृषि कार्यों में व्यतीत होता है। कृषि के विभिन्न कार्य जैसे- रोपाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, सफाई एवं भण्डारण अधिकतर महिलाओं द्वारा ही किए जाते हैं। इन कठिन श्रम युक्त कार्यों में जरूरत से ज्यादा शारीरिक शक्ति लगाने से महिलाओं को थकान, शारीरिक दर्द, कमजोरी एवं बीमारियों के साथ-साथ स्वास्थ्य खतरों का भी सामना करना पड़ता है। पर्वतीय कृषि तो वैसे ही अपनी विषम भौगोलिक स्थिति के कारण जटिल है, साथ ही पर्वतीय कृषि आधुनिकीकरण में भी काफी पीछे है। इस क्षेत्र में कृषि कार्य परस्पर दोहरावपूर्ण, कठिन एवं नीरस होते हैं, परिणामस्वरूप इनके क्रियान्वयन में अधिक थकान महसूस होती है। महिलाओं द्वारा किए गये कार्यों में अधिकांश हिस्सा तनावपूर्ण, पीड़ादायी और न्यूनतम श्रेय के कार्यों का है जिनमें 'कठिन श्रम' की आवश्यकता होती है।



यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि महिलाएँ ही पर्वतीय कृषि की रीढ़ हैं। दिनभर घरेलू कार्यों के अलावा महिलाएँ 8 से 10 घंटे प्रतिदिन फसल के मौसम में खेतों पर काम करती हैं। साथ ही जंगल से लकड़ी लाना, चारा इकट्ठा करना, पानी भरना आदि भी महिलाओं के ही कार्य हैं। यदि महिलाएँ स्वस्थ रहेंगी तो पर्वतीय कृषि भी सतत बनी रहेगी एवं उत्पादकता भी उच्च रहेगी। अतः ऐसे क्षेत्रों में जहाँ महिलाएँ कृषि में अधिक सम्मिलित हैं वहाँ कृषक महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य की गुणवत्ता को बनाए रखना आवश्यक है। प्रायः जानकारी का अभाव, कार्य तकनीकों से अनभिज्ञता, संसाधनों तक पहुंच नहीं होने से भी महिलाएँ व्यावसायिक खतरों या जोखिमों से शिकार होती हैं। महिलाओं की शारीरिक संरचना भी पुरुषों से भिन्न है। अतः जो उपकरण महिलाएँ प्रयोग करती हैं, वे प्रायः पुरुषों की शारीरिक संरचना को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं। ऐसे उपकरणों का प्रयोग करने से भी महिलाओं में शारीरिक, खतरों की आशंका बनी रहती है।

मानव श्रम से भार उठाना

पर्वतीय कृषि एक बहुत ही थकान जनक कार्य है। लगभग हर कार्य जैसे लकड़ी, चारा, पानी लाने तथा गोबर खाद, बीज, उपकरण, आदि एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में मानव श्रम का ही इस्तेमाल होता है। अक्सर, कृषक महिलाएँ भार ढोने के बाद मांसपेशियों में तनाव या खिंचाव की शिकायत करती हैं। सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला अंग है- कमर। सर्वेक्षणों में सबसे अधिक दीर्घकालिक दर्द एवं असहजता की शिकायत कृषक महिलाएँ कमर में (पीठ के निचले भाग) या पीठ के ऊपरी भाग में बताती हैं। कारण है, एक तो असहनीय बोझ एक साथ लादकर लाना एवं दूसरा भार उठाने की गलत तकनीक का प्रयोग करना।

श्रम दक्ष तकनीकों की उपयोगिता

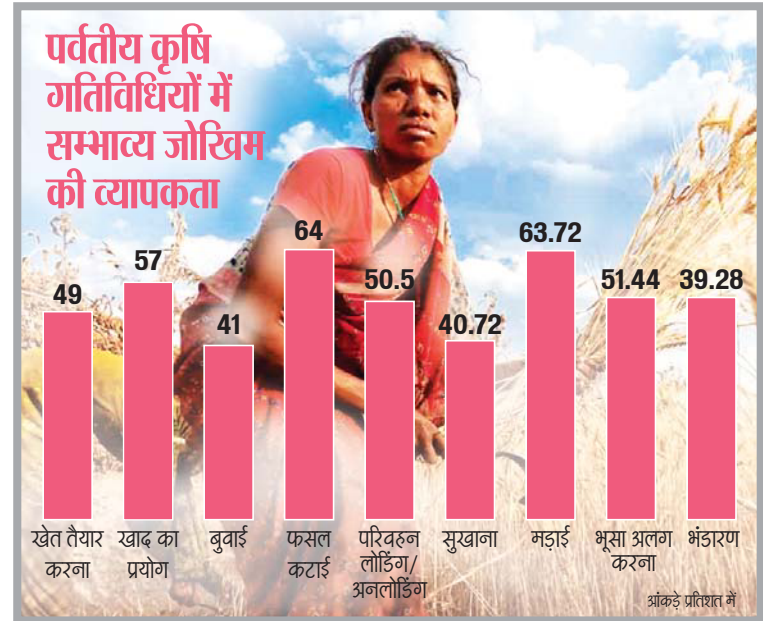
कृषि के अनगिनत कार्य ऐसे हैं, जो दिखने एवं सुनने में तो आसान लगते हैं परन्तु वास्तविकता में यह कड़ी मेहनत भरे व श्रम पूर्ण होते हैं। कृषि एक शारीरिक रूप से

कठिन उद्यम है। कृषि में व्यावसायिक जोखिम के कारक हैं धकेलना एवं खींचना, भार उठाना/ढोना, झुकना एवं मुड़ना, असहज मुद्रा में काम करना, शरीर के किसी विशेष भाग को बार-बार इस्तेमाल करना, उपकरण या औजार द्वारा दबाव, सही पोषण न मिलने से ऊर्जा की कमी, आदि। पर्वतीय कृषि में मानव बल का उपयोग अधिक होता है, यानि कि मशीनीकरण अधिक न होने के कारण अभी भी अधिकांश कार्य मानव श्रम से ही किये जाते हैं। ऐसे में इन जोखिम कारकों की उपस्थिति अधिक बढ़ जाती है। फसल उत्पादन हेतु विभिन्न क्रियाओं के सम्पादन में प्रायः पुनरावृत्ति वाली क्रियाएँ कम से कम एक से दो घंटे तक की जाती हैं, कार्यकर्ता अधिक लम्बे समय तक किसी भी मुद्रा में कार्य करते हैं, जैसे बार-बार लट्टे को उठाना व फसल पर पटकना, सूफ चलाना, आदि। व्यक्तिगत सुरक्षा हेतु उपकरण जैसे मास्क, दस्ताने, आदि का प्रयोग सामान्यतः नहीं किया जाता है। मौसम पर आधारित होने के कारण कम समय में अधिक कार्य करने का तनाव रहता है। ऊँचे नीचे खेत होने के कारण सिर पर या पीठ पर अधिक वजन उठाकर लंबी दूरी तय करना आम है। कठिन श्रम से उत्पन्न मांसपेशीय विकारों में सबसे सामान्य लक्षण है शरीर में दर्द महसूस करना। अक्सर जोड़ों

में अकड़न, मांसपेशियों में संकुचन तथा प्रभावित हिस्से में लालिमा या सूजन भी देखे गये हैं। कुछ कृषकों को शरीर में झंझनाहट, सुन्नपन्न का भी अहसास होता है। कठिन श्रम से उत्पन्न विकार शुरू में तो हल्के प्रतीत होते हैं, लेकिन समय के साथ यह अत्यन्त गम्भीर रूप ले लेते हैं।

कृषि में संभाव्य जोखिमों पर शोध के आंकड़े

कृषक महिलाओं द्वारा विभिन्न उत्पादन प्रणाली में अनुभवित किये गए सम्भाव्य जोखिमों को एक शोध में जोखिम मूल्यांक के रूप में मापा गया। जिन कृषक महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया, उनमें से लगभग आधी महिलाओं ने विभिन्न कृषि गतिविधियों में उच्च जोखिम स्तर एवं एक तिहाई महिलाओं ने मध्यम स्तर के जोखिम अनुभव करने की अवधारणा बताई। गेहूँ उत्पादन में श्रेणिंग को सबसे जोखिम सम्भाव्य गतिविधि (जोखिम मूल्यांक: 60.00) के रूप में पहचाना गया, इसके बाद निराई (जोखिम मूल्यांक: 56.10) और कटाई (जोखिम मूल्यांक: 55.90) के रूप में की गई। सब्जी उत्पादन में रोपाई (जोखिम मूल्यांक: 63.20) को सबसे जोखिम सम्भाव्य गतिविधि, इसके बाद खाद की लोडिंग (जोखिम मूल्यांक: 60.61),



निराई (जोखिम मूल्यांक: 51.00), खेतों की सफाई (जोखिम मूल्यांक: 43.08) और तुड़ाई/कटाई (जोखिम मूल्यांक: 49.70) को जोखिम सम्भाव्य गतिविधि के रूप में आँका गया। मंडुआ की खेती में, निराई और कटाई के बाद श्रेसिंग को सबसे अधिक जोखिम सम्भाव्य गतिविधि पाया गया। स्वास्थ्य जोखिम कारकों पर कृषक महिलाओं को जागरूकता प्रदान करने की आवश्यकता है और स्वास्थ्य खतरों की घटनाओं को कम करने के लिए कृषि स्वास्थ्य और सुरक्षा पर शिक्षा आधारित हस्तक्षेप की योजना बनाई जा सकती है।

कृषि में जोखिम कम करने के उपाय

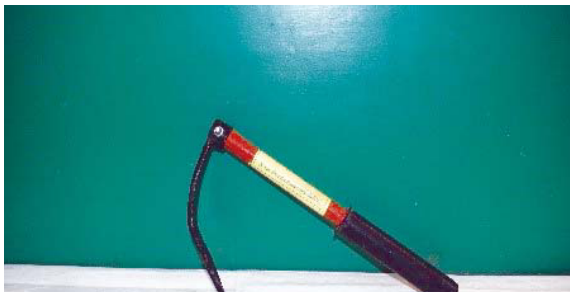
● **कार्य सरलीकरण तकनीक का उपयोग :** कृषि कार्यों को सरल करने के लिए कार्य सरलीकरण तकनीकों का ज्ञान होना आवश्यक है। साथ ही, इन तरीकों को अपने दैनिक व्यवहार तथा कार्यशैली में इस्तेमाल करना भी आवश्यक है, ताकि ये आदत बन जाये। कार्य करते समय कार्यकर्ता को कुछ सम्भावित जोखिमों से बचाने हेतु कार्य विधि को परिष्कृत किया जाता है। महिलाओं द्वारा खर्च ऊर्जा, कार्य करने के क्रम पर निर्भर करती है। याद रखें कार्य करने का सही क्रम इस प्रकार है- हल्का कार्य, मध्यम कार्य, भारी कार्य। एक ही

प्रकार के कार्य एक साथ ना करें। भार उठाते समय उसे शरीर के समीप रखें या शरीर की सीध में उठाना उचित है। ध्यान रहे कि स्वयं के वजन का 30 प्रतिशत भार ही उठाएँ।

● **सुरक्षात्मक वस्त्र का प्रयोग :** कृषि कार्यों में शुरू से ही महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के बराबरी की रही है जैसे बीज तैयार करना, खेत खोदना, फसल काटना एवं एकत्रित करना, भंडारण करना, श्रेसिंग, पशु पालन, इत्यादि। इन सभी कार्यों को करने के दौरान महिला किसान कहीं ना कहीं परोक्ष या अपरोक्ष रूप से दूषित वातावरण के प्रभाव में आती है जिसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है तथा उन्हें कई कठिनाइयाँ जैसे आँखों में जलन, पानी आना, नाक में खुजली व छींके, जुकाम, धूप का त्वचा पर प्रभाव, इत्यादि स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। फसल की गहाई करते समय नाक पर भी कपड़ा ढकना चाहिए अन्यथा भूसे के कण साँस के साथ फेफड़ों में जाकर कई व्याधियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। मशीनों पर कार्य करते समय अपने कपड़ों व बालों का ध्यान रखें। ज्यादा ढीले वस्त्र न पहने अन्यथा वे उड़कर मशीन के किसी भी हिस्से में फंस सकते हैं और कोई भी अंग चोटग्रस्त हो सकता है या कट सकता है। बालों को भी अच्छी तरह बांध कर रखना चाहिए।

● **उन्नत कृषि यंत्रों का उपयोग :** कृषि यंत्रों एवं प्रौद्योगिकियों का निर्माण महिलाओं एवं पुरुषों की शारीरिक जरूरतों एवं क्षमताओं तथा उन्हें कार्य में होने वाली परेशानियों को देखते हुए किया जाता है। उन्नत कृषि यंत्रों से काम करने पर महिलाएँ न केवल अपनी कार्य क्षमता बढ़ा सकती हैं बल्कि स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों में भी कमी ला सकती हैं। विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा कुछ उन्नत यंत्र विकसित किए गए हैं जिनका उपयोग महिला किसान आसानी से कर सकती हैं तथा अपनी कार्यक्षमता बढ़ा सकती हैं।

संस्थान द्वारा विभिन्न फसलों की कटाई के लिए उन्नत दराती विकसित की गयी है। यह पर्वतीय क्षेत्रों में प्रयोग की जाने वाली दराती की तरह ही है परन्तु हल्ये के पास से थोड़ी मुड़ी है, जिससे कार्य (कटाई) करते समय हाथ जमीन से दूर रहता है व चोट लगने का खतरा कम हो जाता है। साथ ही कार्यकर्ता का हाथ पारम्परिक अवस्था की अपेक्षा एक बेहतर अवस्था में रहता है, जिससे काम करने में आसानी होती है। यह वजन में हल्की है व इससे कम समय में ज्यादा कटाई की जा सकती है। कम वजन के कारण इससे काम करना आसान लगता है और हाथ की अंगुलियों में तनाव नहीं होता है। इसलिए महिला कृषकों को फसल



गेहूं उत्पादन में कृषक महिलाओं के अनुभव के आधार पर सम्भाव्य जोखिम एवं उपाय

| गतिविधि श्रेणी | सबसे सम्भाव्य जोखिम | | | निवारक उपाय |
|--------------------------|----------------------|--------------------------------------|--------------------------------------|--|
| | I | II | III | |
| खेत तैयार करना | कट, घाव (2.37) | शरीर में दर्द (1.97) | हाथ पैरों में सूजन/दर्द (1.87) | एर्गोनॉमिक रूप से डिजाइन किए गए बेहतर उपकरण, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण का उपयोग (दस्ताने) का उपयोग |
| खाद का प्रयोग | शरीर में दर्द (3.0) | कीट के काटने (2.45) | कटना, घाव होना (2.43) | व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण का उपयोग, लोड कैरीइंग डिवाइस का उपयोग |
| बुवाई | शरीर दर्द (2.60) | बाँहों और पैरों में सूजन/दर्द (1.40) | कटना, घाव होना (1.23) | सीड ड्रिल, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (दस्ताने, जूते) का उपयोग |
| फसल कटाई | शरीर दर्द (2.93) | कटना, घाव होना (2.62) | त्वचा में जलन/एलर्जी (2.60) | एर्गोनॉमिक रूप से डिजाइन किया गया दर्रांती, सुरक्षात्मक कपड़े |
| परिवहन/(लोडिंग अनलोडिंग) | शरीर में दर्द (2.78) | फिसलना/गिरना (2.77) | बाँहों और पैरों में सूजन/दर्द (2.07) | भार ढोने वाला हार्नेस, अच्छी पकड़ वाले जूते |
| सुखाना | शरीर में दर्द (1.90) | त्वचा में जलन (1.78) | कट/घाव/चोट (1.43) | एर्गोनॉमिक रूप से डिजाइन किए गए बेहतर उपकरण, पीपीई (दस्ताने) का प्रयोग |
| मड़ाई | शरीर में दर्द (2.58) | आंख में जलन (2.55) | त्वचा में जलन/एलर्जी (2.53) | व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण का उपयोग, एर्गोनॉमिक रूप से डिजाइन किया धेशर |
| भूसा अलग करना | शरीर में दर्द (2.52) | त्वचा में जलन (2.27) | साँस लेने में कठिनाई (2.21) | विनोदर/ विनोइंग मशीन का उपयोग, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण का उपयोग |
| भंडारण | शरीर में दर्द (2.06) | साँस लेने में कठिनाई (2.67) | त्वचा में जलन (1.23) | भारी बोझ उठाने से बचें |

कटाई के लिए उन्नत दर्रांती का प्रयोग करना चाहिए। महिला कृषकों के लिए निराई-गुड़ाई व खरपतवार निकालने का कार्य कमरतोड़ मेहनत वाला होता है। इस कार्य को पारम्परिक तरीके से हाथ या कुटले/कुदाली से घंटों झुककर किया जाता है। इस कार्य के लिए वी एल उन्नत फोर्क एवं हैन्ड हो का प्रयोग किया जा सकता है। इसके द्वारा महिला किसान कम समय में क्यारियों के बीच की खरपतवार निकाल सकती हैं। साथ ही लंबे हथ्थे के फोर्क से काम करने में शरीर की संरचना भी सही बनी रहती है जिससे गर्दन, कंधे व कमर के दर्द से भी छुटकारा मिलेगा। यदि बुवाई कतार में की गई हो तो खरपतवार निकालना आसान होता है। पंक्ति निकालकर बुवाई करने के लिए वी एल लाइन मेकर का उपयोग कर महिला किसान आसानी से कम श्रम में खेतों में पंक्ति निकाल सकती हैं।

विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित कुटला पारम्परिक कुटले के मुकाबले श्रम साध्य है।

● **कार्य करने के लिए सही उपकरण का चुनाव :** लंबे हथ्थे के उपकरण का उपयोग करें जिससे आप को कम झुकना पड़े और पीठ की चोट का खतरा कम हो। सबसे हल्के वजन वाले उपकरण को चुनें किंतु यह मजबूत एवं काम पूरा करने के लिए पर्याप्त हो। ऐसे उपकरणों का उपयोग करें, जो नरम हो और फिसलन रहित हो। कुशन ग्रिप वाले उपकरण हैंडल को पकड़ने के लिए आसान बनाते हैं।

● **तटस्थ मुद्राओं का प्रयोग :** तटस्थ मुद्राओं में उत्पन्न अधिकतम मांसपेशी बल असामान्य मुद्राओं में उत्पादित अधिकतम मांसपेशियों की शक्ति से अधिक है। असहज मुद्राओं में काम करते समय थकान जल्द ही होती है।

निष्कर्ष

कठिन श्रम को तब तक सहा जा सकता है जब तक इसका परिणाम मुख्य विकारों/खतरों में परिवर्तित ना हो जाए। अतः इस प्रकार की अव्यक्त स्थितियों से बचने के लिए कठिन श्रम न्यूनीकरण उपायों की शुरुआत की जानी चाहिए। उन्नत उपकरण, जिनका विकास श्रम प्रयुक्त विज्ञान द्वारा बनाया हो, के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि कृषक महिलाओं का स्वास्थ्य उत्तम रहे तथा उत्पादकता में भी वृद्धि हो। जानकारी का अभाव, कार्य तकनीकों से अनभिज्ञता, संसाधनों तक पहुँच नहीं होने से भी महिलाएँ व्यावसायिक खतरों या जोखिमों से शिकार होती हैं। कार्यक्षेत्र में सुरक्षा तकनीकों एवं कार्य सरलीकरण को कृषकों द्वारा अपनाया जाना आवश्यक है। स्वास्थ्य जोखिम कारकों पर कृषक महिलाओं को जागरूकता प्रदान करने की भी आवश्यकता है।